अध्यापक

❑ कप्तान सिंह

शिक्षा का एक घोषित अथवा प्रच्छन्न उद्देश्य 'सांस्कृतिक संतरण' (कल्चरल शिफ्टिंग) भी रहा है अर्थात बच्चों को एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में ढालना । औपनिवेशिक संदर्भ में इस प्रक्रिया पर बहुत चर्चा होती रही है और इसके पक्ष-विपक्ष में अनेक तर्क दिये जाते रहे हैं । भारत में आदिवासी समाज की शिक्षा के संदर्भ में, कुछ दबा-सा ही सही यह सवाल सिर उठाता रहा है । बहरहाल ,सिल्विया एश्टन-वॉरनर की पुस्तक 'अध्यापक' हमारे सामने एक विचार उपस्थित कर सकती है कि शिक्षण-प्रविधि को किसी भी उद्देश्य के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है । उन्होंने माओरी बच्चों के सांस्कृतिक अन्तरण के लिए अत्यंत सूक्ष्म और संवेदनशील शिक्षण-प्रविधि का विकास किया था जिसकी यहां चर्चा की जा रही है ।

'अ'ध्यापक' पुस्तक शिक्षा की पुस्तकों में लिखी गई एक महत्वपूर्ण पुस्तक है जैसा कि पुस्तक की प्रस्तावना में कृष्णकुमार ने पहली पंक्तियों में लिखा भी है । बच्चों की शिक्षा के बारे में बीसवीं सदी में लिखी गई पुस्तकों में सिल्विया एश्टन-वारनर की इस पुस्तक की हैसियत कुछ अलग ही है । हिन्दी में इस पुस्तक का प्रकाशन निश्चय ही एक घटना है । यदि हम पूरी पुस्तक को देखें तो यह दो खंडों में बंटी हुई प्रतीत होती है । पुस्तक का पहला भाग रचनात्मक शिक्षण के संबंध में है जिसमें लेखिका सहज पठन-पाठन, लेखन और बच्चों की आधारभूत शब्दावली, समूह व्यवस्था, विषयों के परस्पर संबंधों और सहज शिक्षण की बात करती है ।

दूसरे भाग में लेखिका अपने माओरी स्कूल के जीवन के बारे में जिक्र करती है । स्कूल में घटने वाली घटनाओं का जिक्र करती है । एक माओरी समाज के बच्चों के साथ उसने कैसा जीवन जिया? इस प्रकार यह पुस्तक तेरह अध्यायों में है। पुस्तक में जो लिखा गया है वह सीधे रूप में है, उसमें कोई बनावटी व्यवस्थानुक्रम नहीं है । ऐसा नहीं है कि पूरी पुस्तक किसी तार्किक ढांचें में बंधी हुई है । लेकिन प्रत्येक शीर्षक अलग शैक्षणिक प्रयोग की कहानी भी नहीं है । जैसा कि इस पुस्तक की प्रस्तावना में लिखा गया है । सिर्फ एक विचार के इर्द गिर्द लेखिका ने अपनी कक्षा के पाठ्यक्रम को दुनिया से अलग बुनावट किस तरह दी, इस प्रश्न का उत्तर यह पुस्तक छोटी टिप्पणियों, तो कहीं डायरियों, कहीं संवादों की शक्ल में देती है ।

सिल्विया एश्टन वॉरनर के शिक्षण शास्त्र का केन्द्र दरअसल पढ़ना सिखाना ही था । यह दु:खद सच्चाई भी पुस्तक को पढ़कर सामने आती है कि अधूरी और विकृत शिक्षा मनुष्य की वर्तमान शिक्षा के लिए कितना बड़ा अभिशाप है ।

सिल्विया एश्टन वारनर के अनुसार विध्वंस और रचना मनुष्य की ऊर्जा की अभिव्यक्ति के दो रास्ते हैं । जो ऊर्जा रचना का रास्ता प्राप्त नहीं कर पाती, वह विध्वंस के रास्ते पर आगे बढ़ती है । रचना और विध्वंस के बीच यह चुनाव बचपन के दिनों में अपने निर्णायक दौर से गुजरता है।

जैसा कि पुस्तक की प्रस्तावना में ही स्पष्ट लिखा है, लेखिका के अपने देश न्यूजीलैंड में भले इस पुस्तक का स्वागत न हुआ हो किन्तु अमरीका और इंग्लैंड में उसका प्रभाव दूर-दूर तक फैला। पढ़ना सिखाने की रूढ़ विधियों का उखाड़ने में मदद देने के अलावा सिल्विया एश्टन वॉरनर की छोटे बच्चों से संवाद स्थापित करने की क्षमता हजारों शिक्षकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी ।

बच्चे का विश्वास जीते बिना कोई शिक्षा नहीं दी जा सकती, यह सिद्धांत और बच्चे का विश्वास जीतने का तरीका पुस्तक के दो बड़े आकर्षण बताये गये हैं, जो पुस्तक को पढ़ने पर सहज ही पता चलता है ।

हरबर्ट रीड इस पुस्तक को महत्वपूर्ण मानते हुए इसकी भूमिका में लिखते हैं, सिल्विया एश्टन वॉरनर का विश्वास है कि उन्होंने अध्यापन की ऐसी पद्धति खोज निकाली है जो मानव को स्वाभाविक और स्वत: स्फूर्त ढंग से शांतिप्रेमी बनाएगी। वे अध्यापन की प्रभावी पद्धति का व्यावहारिक प्रदर्शन करती है। यह पुस्तक उनका एक समाज शास्त्रीय दस्तावेज है और यह अत्यन्त मार्मिक है । लेखिका ने मानवता को आत्म विनाश से बचाने का रास्ता ढूंढ निकाला है । उनकी पद्धति सीधी सादी व दिखावे से मुक्त है ।

लेखिका द्वारा लिखे गये एक पत्र से पता चलता है कि वह इस पुस्तक को छपवाने का सात सालों तक प्रयास करती रही । कई प्रकाशकों ने तो इसे लौटा दिया था ।

इस पुस्तक में माओरी बच्चों को माओरी संस्कृति से यूरोपीय संस्कृति में परिवर्तित (कनवरजन) करने का मामला प्रतीत होता है। जैसा कि लेखिका कहती है, सहज पठन के बिना हम किसी भी बच्चे को एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति की ओर नहीं ले जा सकते।

सहज पठन को लेखिका एक सेतु के रूप मे देखती है । माओरी संस्कृति से योरोपीय संस्कृति तक जाने में । लेखिका अपने शिक्षण में रचनात्मक शिक्षण पर बहुत बल देती थी । वह आरंभिक शब्दावली के रूप में चित्रों का उपयोग करती थी। जो बच्चों की अंतर्दृष्टि से उपजे होते थे और सहज होते थे। उन्हीं के शीर्षक बच्चे की आधार भूत शब्दावली होते थे । लेखिका के स्कूल में सहज पठन-लेखन की प्रक्रिया क्या रहती थी ? बच्चे में इस प्रक्रिया का विकास किस तरह होता था ? इस बात को लेखिका किताब में ठीक तरह से बयान करती है। शिक्षक का बच्चों के साथ समूह कक्षा के रूप में काम करने का तरीका क्या हो ? वह बच्चों की शिक्षा की ठीक व्यवस्था कैसे बना पाये और किस अनुशासन के साथ शिक्षक बच्चों के साथ काम करें ? इन सब बातों का जिक्र लेखिका विभिन्न शीर्षकों में लिखे हुए लेखों में करती है।

हरबर्ट रीड़ इस पुस्तक को महत्वपूर्ण मानते हुए इसकी भूमिका में लिखते हैं, सिल्विया एश्टन वॉरनर का विश्वास है कि उन्होंने अध्यापन की ऐसी पद्धति खोज निकाली है जो मानव को स्वाभाविक और स्वत: स्फूर्त ढंग से शांतिप्रेमी बनाएगी। वे अध्यापन की प्रभावी पद्धति का व्यावहारिक प्रदर्शन करती है। यह पुस्तक उनका एक समाज शास्त्रीय दस्तावेज है और यह अत्यन्त मार्मिक है । लेखिका ने मानवता को आत्म विनाश से बचाने का रास्ता ढूंढ निकाला है । उनकी पद्धति सीधी सादी व दिखावे से मुक्त है।

शिशु कक्षा में बच्चों की गतिविधियां जितनी रचनात्मक होंगी उतना ही अच्छा उनका मानसिक विकास संभव होगा । विभिन्न विषयों में साम्य और सीखने में उसके उपयोग को लेखिका सुनहरे हिस्से का नाम देती है । रचनात्मकता व अभिव्यक्ति ही इस सुनहरे हिस्से को सीखने का तरीका है।

बच्चों का सहज शिक्षण कैसे हो ? इन गतिविधियों को लेखिका सहज ढंग से पुस्तक में पेश करती है । जैसे विषयों को रचनात्मक शिक्षण की ओर मोड़ देने से बच्चों के प्रयास और गतिविधियां अधिक मुखर हो सकने की संभावना बनती है । बच्चों को रचनात्मकता के रास्ते पर चलाने के सवाल को लेखिका अंतर्राष्ट्रीय मानती है और कहती है 'शिशुओं की कक्षा ही ऐसी जगह है जहां युद्ध और शांति जन्मती है । हिंसात्मकता में ही रचनात्मकता छिपी हुई है ।'

लेखिका बच्चों के साथ किये अनुभवों को बांटती है । पुस्तक का एक भाग वह है जिसमें लेखिका अपनी डायरी को उदृत करती है । लेखिका की रुचि शिक्षण व्यवसाय की तरफ उनके रुझान को प्रदर्शित करती है । वे यहां तक मानती हैं, 'जिस किसी को शोर पसंद नहीं है वह शिक्षक नहीं बने क्योंकि बच्चे तो शोर करते ही हैं । लेखिका ने न्यूजीलैंड में खास प्रजाति (माओरी) के बच्चों के साथ शिक्षण का काम किया। अलग-अलग प्रजातियों में अलग-अलग खास गुण पाये जाते हैं । माओरी प्रजाति के बच्चे भी जाति के खास गुणों से संपन्न थे। उनमें से एक गुण था लड़ो और अव्वल रहो । अन्य दूसरे गुण भी थे - ध्यान से सुनना, गहराई से अनुभव करना आदि ।

लेखिका के शिक्षा में काम के दौरान काफी उतार चढ़ाव आते हैं। यहां तक इस व्यवसाय से विमुख होने की बात वह सोच लेती हैं, लेकिन उनका यह विचार बदल जाता है । शिक्षण में अन्य गतिविधियों (कहानी, संगीत, बुनाई, सिलाई आदि रचनात्मक क्रियाकलापों) को वह विशेष महत्व देती थी । लेखिका ने जो शिक्षण कर्म किया उसमें उसकी आस्था थी। उनको अपने पर पूरा विश्वास था । बच्चों को भी शिक्षिका पर विश्वास था। वह बच्चों से किये गये वायदों को समय पर पूरा करती थी।

लेखिका की दृष्टि से बच्चों के प्रति किसी भी प्रकार की दण्डात्मक कार्यवाही उन्हें मनोरोगी बना देती है। प्रताड़ना के कारण बच्चे अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं।

पुस्तक के अंतिम भाग में लेखिका उन दिनों व उन क्षणों को बयान करती है जो उसने बच्चों के साथ बिताए थे । लेखिका के अंतस में वे पूरे खयाल मुखर हो उठते हैं जब वे शिशु कक्षा में नन्हों के बीच थी । मानो उसके नन्हें ने उसे अभी भी सुबकते हुए बताया था कि किसी ने बेकार में ही उसका किला तोड़ दिया ।

इस पुस्तक में लेखिका इन चीजों की बात करती है -

- बच्चों की स्वतंत्रता को महत्व ।
- बच्चों में वे किसी बाहरी अनुशासन की ज्यादा कायल नहीं है यदि किसी कक्षा से बालक बाहर जाते हैं, उनका

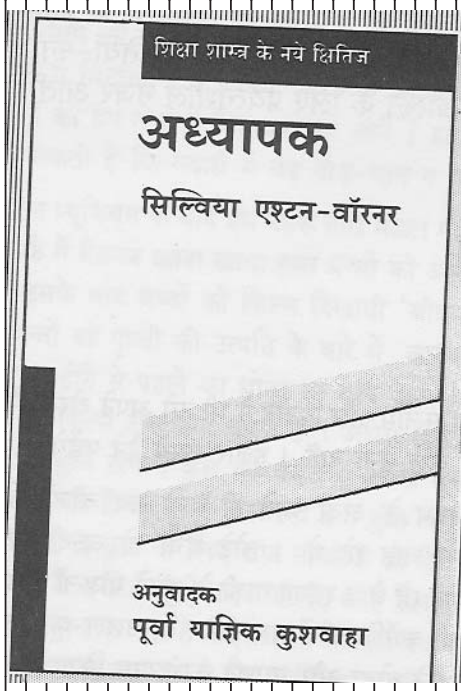

''. . . बच्चों को केंद्र में रखकर शिक्षा देना बहुत कठिन काम है। अगर अध्यापक में कल्पना, संवेदनशीलता और आनंद पैदा करने की क्षमता नहीं है तो वह अपनी कक्षा को जीवन्त नहीं बना सकता और आनन्द रहित शिक्षण बच्चों के लिए दंड है । और अध्यापक की असफलता का द्योतक भी ।

बच्चों के लिए सीखने का अर्थ खेलना है, स्वप्न देखना है और उस स्वप्न के अर्थ को खोजना है । इस पुस्तक में लेखिका ने ऐसे अनेक स्वप्नों के शब्द-चित्र प्रस्तुत किये हैं । इसमें जिन बातों को रेखांकित किया गया है, वे हैं : बच्चों का संगीत से लगाव, अपने परिचित शब्दों से लगाव तथा अपनी कहानी और अपने वातावरण से लगाव।

प्रस्तुत पुस्तक में सीखने-सिखाने के सारे अनुभव, कार्य, नवाचार और प्रयोग सृजनात्मक रूप में प्रस्तुत किये गए हैं, इसको पढ़ते समय पाठक ऐसा महसूस करेगा कि यह शिक्षा की पुस्तक न होकर बच्चों और जनजातियों के बीच आनन्द की अनेक घटनाओं की कहानी है ।...

- हरबर्ट रीड

पढ़ने में मन नहीं लगता तो दोष शिक्षक का है । मतलब जरूर कक्षा में कोई गड़बड़ हो रही है ।

- जो कुछ भी बच्चों की कल्पना से उपजे, वही होगा सहज, वही होगा सम्पूर्ण ।
- कक्षा में अधिक सामग्री होने का मतलब है बच्चों को उनके निजी स्रोतों से वंचित करना ।
- कहानी शिक्षण को महत्व दें ।
- पोशाक (गणवेश को महत्व) आचरण पर प्रभाव डालती है । बच्चों के व्यवहार को बदलने में सहायक होती है ।
- जब हम बच्चे के स्वाभाविक आचरण में बाधा डालते हैं तो वह बिफरता है ।
- आरंभ में लेखिका को इन माओरी बच्चों के साथ काम करने में काफी समस्याएं आई, कई हफ्ते तो इस बात को लिखने में ही लग गये कि बात सुनें और मानें ।
- कभी कभी सपने भी सच्चाई में बदल जाते हैं लेकिन मेहनत के बिना नहीं।
- खेलों को महत्व ।
- असंबद्ध लेखन लेखिका को चिन्तित करता था । हस्तलेख उतना नहीं।
- इस पुस्तक में माओरी बच्चों का एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में अंतरण का मामला है ।
- सिल्विया के शिक्षण में विधि महत्वपूर्ण नहीं थी, वे बच्चों के प्रति संवेदनशील इंसान थी। वह बच्चों के साथ प्यारा रिश्ता बनाने वाली शिक्षिका की तरह बच्चों की भावनाओं को आत्मसात करती थी।
- यह पुस्तक सुविचारित तर्क में बंधी हुई पुस्तक नहीं है।
- चिंतन शिक्षा का उद्देश्य अविचारित लगता है ।
- पुस्तक में जो संवेदना उभरी है वह अनुकरणीय है ।
- यह शिक्षिका ऐसी थी कि यह कोई सी भी विधि शिक्षण में काम लेती थी ।
- शिक्षा मूलत: अचेतन को संचेतन में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है यानी इसे ठीक एक बढ़ते, विकसित होते विचार की तरह होना चाहिए ।
- लेखिका संगीत प्रेमी थी । संगीत का प्रयोग उन्होंने बच्चों के शिक्षण में किया । वे संगीत से सामाजिकता की बात करती हैं ।
- बच्चों के पास जो है उसी से शिक्षण का आरंभ रखना।◆